कोंकणी साहित्य

डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र

गोवा में कोंकणी भाषा एवं साहित्य की एक लंबी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही है। पुर्तगाली शासन (1510-1961) के दौरान यहाँ के शासकों ने कोंकणी के अस्तित्व को समाप्त कर पोर्तगीज भाषा को स्थापित करने पर बल दिया। फलत: कोंकणी को अपनी अस्मिता के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ा। चूंकि इसकी जड़ें यहाँ की भूमि में मुरझाई दूब की भाँति बिखरी पड़ी थीं जोकि तत्कालीन कोंकणी रचनाकारों द्वारा सर्जन की ऊष्मा, पानी और हवा प्राप्त कर प्रफुल्लित होती रहीं। वस्तुत: कोंकणी को जड़ समेत उखाड़ने का प्रयत्न उस समय स्थानीय स्तर पर भी खूब हुआ। परिणामस्वरूप गोवा मुक्ति (1961) के पूर्व कोंकणी भाषा एवं साहित्य का विकास लगभग थम सा गया। मुक्ति के पश्चात कोंकणी प्रेमियों और सरकार के सहयोग से कोंकणी की दूर्वा हरी-भरी होने लगी। 1975 में इसे राष्ट्रीय साहित्य अकादमी और 1987 में राजभाषा की मान्यता मिली। 1992 में इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया। कालांतर में कोंकणी भाषा मंडल, अस्मिताएँ, प्रतिष्ठान और 1986 में गोवा कोंकणी अकादमी की स्थापना से कोंकणी भाषा, साहित्य और संस्कृति के विकास के नए-नए आयाम विकसित हुए। अभी तक 27 कोंकणी साहित्यकारों को साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य हो रहा है। कोंकणी भाषा एवं साहित्य के जनक शणै गोंयबाब की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में 2003 को अस्मिताएँ वर्ष के रूप में मनाया गया। कोंकणी अकादमी, कोंकणी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, कोंकणी भाषा मंडल, अस्मिताएँ प्रतिष्ठान, गोवा कला अकादमी, तॉमास स्टीवेंस कोंकणी केंद्र आदि जैसे अन्य संस्थाओं एवं विभिन्न स्तरों की शिक्षा संस्थाओं द्वारा पूरे वर्ष भर विविध साहित्यिक कार्यक्रमों

की धूम मची रही। इसके अतिरिक्त पुस्तकों के लेखन एवं उनके विमोचन तथा पुस्तक प्रदर्शनियों का सिलसिला भी चलता रहा।

काव्य लेखन :

गोवा की नैसर्गिक सुषमा और यहाँ के लोगों की भावुकता काव्य लेखन की भूमि को सदियों से उर्वर बनाए हुए है। कालांतर में जीवन एवं जगत में आए बदलावों के साथ कोंकणी कविता भी अपनी पुरानी काव्य प्रवृत्तियों की केंचुल को उतार फेंकती गई। यह परिवर्तन कोंकणी की अन्य विधाओं में भी हुआ। यह सही है कि अन्य भारतीय भाषाओं में परिवर्तन की गति तेज रही। वस्तुत: यहाँ लेखन के क्षेत्र में मराठी का प्रभुत्व अधिक रहा है जिसका प्रभाव आज भी परिलक्षित होता है। सही बात तो यह है कि कोंकणी आज भी अपनी अस्मिता के लिए मराठी से संघर्ष कर रही है। ऐसे में कोंकणी के रचनाकार सर्जन की दिशा में सक्रिय एवं जागरूक हैं और अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह बड़ी खूबी से कर रहे हैं।

काव्य लेखन के क्षेत्र में वर्ष 2003 में संजीव वेरेंकार (गांवातली सांज), श्रीमती नयना आडारकार (मन सांवार), शुभु काशीनाथ गावडे (दखंल), मनोज कामत (तांबशी), शशिकांत पुनाजी (उमज), नम्रता सातेलकार (थिंका), निलबा खांडेकार (अग्नी), प्रकाश पाडगांवकार (व्हांवती न्हंय) आदि कवियों के काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए जिनकी कविताएँ विभिन्न भावभूमियों पर आधारित हैं। इनके अतिरिक्त उल्हास प्रभु-देसाय का "कोंकणी देश भक्ति" तथा सुधा आमोणकार का "आत्म्याचें संगीत" नाम से दो गीत-संग्रह प्रकाशित हुए।

कथा लेखन :

कोंकणी कथा लेखन की परंपरा में एन. शिवदास (भांगर साळ), भालचंद्र गांवकार (दोंगराचें-आंवडे), के कहानी संग्रह तथा दामोदर मावजो का 'उंच हावेस उंच माशे' (कथात्मक जीवनी) आदि रचनाएँ आईं। अशोक भोंसले एवं मलयालम साहित्य के प्रसिद्ध लेखक श्री वी. कृष्ण वाध्यार के क्रमश: "रातराणी" एवं "दुर्षती" नामक उपन्यास तथा वामन टाकेकार की लघु कथा "मिरास" नाम से पुस्तकें प्रकाशित हुईं। बालकथा लेखन के क्षेत्र में माया खरंगटे की "नीलम" एवं "शिटुक हाकू" दो रचनाएँ आईं।

नाटक एवं एकांकी लेखन :

गोवा में नाटक एवं एकांकी लेखन एवं मंचन की समृद्ध परंपरा रही है। यहाँ की विभिन्न संस्थाएँ नाटक महोत्सव का आयोजन करती रहती हैं। कोंकणी अकादमी और पार्से युवक संघ तथा ध्रुव स्पोर्ट्स एंड कल्चरल क्लब ने संयुक्त रूप से 11 से 15 फरवरी

2003 तक ग्यारहवें कोंकणी नाटक महोत्सव का आयोजन किया जिसमें संपूर्ण गोवा की नाटक मंडलियों ने भाग लिया। जिसका उद्घाटन प्रसिद्ध नाटककार एवं कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष श्री पुंडलीक नायक ने किया। इसी प्रकार गोवा कला अकादमी भी नाटक एवं एकांकी की प्रतियोगिताओं का आयोजन करती रहती है। गोवा तियात्र के लिए जाना-पहचाना जाता है। जात्राओं की तो यहाँ धूम मची रहती है।

गोवा के चर्चित तियात्र लेखक मायक मेहता एवं आग्नेय फेर्नांडिस की क्रमशः "पावल म्हजें चुकलें" एवं "नातें" (तियात्र), विष्णु वाघ की "सुवारी" तथा रजनी भेंब्रे की "आळ" एवं "सुखी संवसार", गोकुळदास मुळवी की "क्रांतिज्योत" (एकांकी) आदि पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इसके अतिरिक्त श्रीकांत नागवेकर का "खगोल शास्त्रीय नाटयांगण" एवं "कायदो तियात्राच्या" नामक पुस्तक का देवनागरी लिपि में प्रकाशन हुआ।

निबंध लेखन :

गोवा में गाँधीवादी वयोवृद्ध विचारक रवींद्र केळेकार ने वैचारिक एवं ललित निबंध की एक सशक्त परंपरा कायम की। इस वर्ष आपका "अमोरेर" निबंध-संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें 'देश भोंवन पळोवंक जाय', 'सारे जहाँ से अच्छा', 'डॉ. लोहिया', 'पुतळे-एक अणभव', 'राष्ट्रपति भवनांत', 'विश्वसुंदरी', 'भगतसिंग सपनांत', 'सॉक्रतिश' आदि विभिन्न विषयों से संबंधित कुल बीस निबंध संकलित हैं।

एस.एम. बोरजेस के Triumph of Konkani अंग्रेज़ी निबंध-संग्रह का अनुवाद एस. एन. बॉर्जीस ने "कोंकणी भाशेचें जैत" नाम से किया। इनके अतिरिक्त दत्ता दामोदर नायक का "जाय काय जूय", प्रकाश तळवणेकार का "गोंय आनी गोंयकारपण", रजनी भेंब्रे का "कोंकणी निबंध" एवं एल. सुनीता का "चिंतन-अनुचिंतन" आदि निबंध संग्रह प्रकाशित हुए।

अन्य लेखन :

कोंकणी साहित्य की प्रमुख विधाओं के साथ-साथ इस वर्ष अन्य विधाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित हुईं। एन. शिवदास का "शणै गोयबाब जिवीत आनी वावर", अभय कुमार वेलींगकर का "फॉरेन सत्री आनी-मायकल स्ट्रागीफ", सुहास दलाल का "गुरुनानक", किरन बुडकुले का "शणै गोंयबाब : व्यक्ति एवं कार्य" एवं दामोदर मावजी का "उंच हावेस उंच माये" और "अशे घडले शणै गोंयबाब" (जीवन-चरित), सुनंदा नायक का "आप उलोवणी" (आत्मकथा), सुजाता सिंगबाल की "काणी एके जिणेची", जयंती नायक की "कलैची बनवड", दत्ता नायक

की "घटक राज्याच्यो केल्ल्यो भोयो भोयो आतां तरी थांबतल्यो व्हय?", श्रीनिवास प्रभुदेसाय का "लोकवेद" आदि पुस्तकें प्रकाशित हुईं। पांडुरंग भांगी का "शब्दसागर" तथा व्याकरण की एक पुस्तक "कोंकणी शुद्धलेखन" का भी प्रकाशन हुआ।

पत्र-पत्रिकाएँ :

गोवा में एकमात्र कोंकणी समाचार-पत्र "सूनापरांत" प्रकाशित होता है। पहले यह प्रसिद्ध साहित्यकार, चिंतक एवं संपादक श्री उदय भेंब्रे के संपादन में मडगाँव से मात्र चार पृष्ठों में निकलता था। अब यह 16 जनवरी 2004 से युवा संपादक संदेश प्रभुदेसाय के संपादकत्व में दस पृष्ठों में राजधानी पणजी से निकलने लगा है जिसमें गोवा के विविध समाचारों को स्थान मिलता है। इसे हम गोवा प्रदेश का दर्पण कह सकते हैं।

यहाँ से लगभग कुल दस कोंकणी पत्रिकाएँ निकलती हैं जिनमें संपादक रवींद्र केलेकार, कार्यकारी संपादक माधवी सरदेसाय के संपादकत्व में कहानी, समीक्षा, निबंध, भाषा विज्ञान आदि साहित्यिक विषयों पर केंद्रित "जागर" एवं सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक पत्रिका "बिंब" और रोमन लिपि में "गुलाब" जैसी मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन क्रमश: दिलीप बोरकार एवं फ्रेडी डिकोस्टा के संपादन में हो रहा है।

इसी प्रकार मूलत: कहानी की "कुळागर" (संस्थापक चंद्रकांत केणी) एवं कविता की "ऋतु", विविध विषयों पर केंद्रित "कोंकण टाइम्स" तथा भाषा विज्ञान एवं शोध पर आधारित "शोध-पत्रिका" जैसी त्रैमासिक पत्रिकाएँ क्रमश: हेमा नायक, गोकुलदास प्रभु, तुकाराम शेट और प्रताप नायक के संपादन में निकल रही हैं। 'कोंकणी भाषा मंडल' मडगाँव, "कोंकणी" नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन श्याम वेरेंकार के संपादन में कर रहा है। मंगलूर से देवनागरी कन्नड में "अमर कोंकणी" नाम से एक पत्रिका निकल रही है।

पुरस्कार :

इस वर्ष का साहित्य अकादमी पुरस्कार शशांक सीताराम को उनके "परिघ" कथासंग्रह पर दिया गया। दामोदर मावजो को "भुरगीं म्हगेलीं तीं" पुस्तक पर "जनगंगा", चंद्रकांत केणी को अनुवाद के लिए "गजानन एम. सबनिस" तथा माया खरंगटे को "रामनाथ माता" (बाल साहित्य) आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

अन्य :

कोंकणी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार और जानकारी हेतु गोवा कोंकणी अकादमी ने www.goakonkaniakademi.org से वेबसाइट शुरू किया है। इसे तैयार करने का श्रेय

मुकेश थली को जाता है। इसके द्वारा देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी कोंकणी के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। थॉमस स्टीफंस कोंकणी केंद्र द्वारा "भक्ति सोभाण" और "हांसून खेळून गावया" पर दो-दो सी. डी. तथा कोंकणी ऑडियो कैसेट तैयार किए गए। हिंदी संगीत की धुन पर पॉप कलाकारों के सुरों से सजा हुआ "तुजे विण" कोंकणी कैसेट तैयार हुआ, जिसमें नामी गायक शान, शंकर महादेवन, वैशाली सामंत, बेला सुलांखे और स्वप्नील बांदोडकर की आवाज में पहला कोंकणी अल्बम तैयार हुआ। इसमें प्रसिद्ध कविवर मनोहरराय सरदेसाय, उदय भैंब्रे, श्रीधर कामत आदि के गीतों को लिया गया है। इन गीतों को अशोक पत्की ने संगीत दिया है।

गोवा में कोंकणी अकादमी, कोंकणी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है। इसने वर्ष 2003 में कोंकणी नव लेखकों को प्रोत्साहित करते हुए उनकी पहली पुस्तक को अनुदान देकर प्रकाशित करवाया जिनमें 'मिरास' (वामन टाकेकार), 'कित्याक' (संजय बोरकार), 'एका नव्या विचाराची सुखात' (अविनाश च्यारी), 'अर्शे आयलें न्हार' (आग्नेल फेर्नांडीस), 'दखळ' (शंभू खेडेकार), 'अग्रेक' (सखाराम बोरकार) 'काणी एके जिणेची' (सुजाता आमोणकार) आदि पुस्तकें सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त सुरेश आमोणकार की मूल संस्कृत के साथ भगवदगीता का कोंकणी में अनुवाद "श्री भगवंतान गायिलें गीत" नामक शीर्षक पुस्तक को भी अनुदान दिया गया।

बालसाहित्य अकादमी, तियात्र एवं अन्य कोंकणी साहित्य की विधाओं में लेखन के लिए अनुदान देकर रचनात्मक प्रतिभाओं को प्रोत्साहित कर रही है। इसके अतिरिक्त अकादमी की अन्य योजनाएँ कोंकणी भाषा एवं साहित्य की समृद्धि हेतु चलाई जा रही हैं। इस दिशा में यहाँ की भाषा और साहित्य से जुड़ी अन्य संस्थाएँ भी सक्रिय साझेदार की भूमिका का निर्वाह कर रही हैं।